

डीएनए कनेक्शन विद कर्म?

परम शांति। दूसरा वीडियो, मैं पहले वीडियो के कंटिन्यूएशन में ही बना रही हूँ। जैसे पहले वीडियो में मैंने कुछ तत्त्वों का जिक्र किया था। तो आज वायुमंडल हैवी हो जाने से, कैसे इंसान के शरीर पर वो इफेक्ट डाल रहा है और कैसे आज इंसान अपनी आत्मा की शक्ति को भी घटाते हुए तामसिकता की ओर जा रहा है। तो यह कैसे अपने आप को कर्मों से हर पल बना रहे हैं और हर पल चेंज कर रहे हैं। यह सब बातें एक दूसरे से रिलेटेड हैं। यदि हम इन्हें ध्यान से देखें। तो कई दिनों से मेरे मन में कुछ ऐसे कनेक्शन आए। जो मैं आप के साथ शेयर कर रही हूँ। देखिए पहली चीज हमने कहा कि वायु तत्त्व हैवी हो गया। हमें यह पता है। हम पहले यह देखते हैं कि स्पिरिचुअल साइंस हमें क्या बताती है। हमें स्पिरिचुअल साइंस यह बताती है कि हम इस दुनिया में जितने भी ह्यूमनस हैं। वो सब का असली स्वरूप है, आत्मा। हमारे शरीर को चलाने वाली चैतन्य शक्ति आत्मा है। हमें साइंस यह भी बताती है कि हम पांच तत्त्वों से मिलकर बने हैं। जैसे पृथ्वी है, अग्नि है, आकाश है, वायु है और जल है। इसका मतलब दुनिया में जितने भी ह्यूमन विंग्स हैं। प्रकृति है। वो सब के सब पांच तत्त्वों का कॉम्बिनेशन है। अब तीसरी बात स्पिरिचुअल साइंस हमें यह बताती है कि हम इस दुनिया के अंदर आए हैं। कुछ कर्मों का हिसाब किताब लेकर। तो कर्मों के कारण ही हम यहां आए हैं। यदि हमारे कर्म बंधन नहीं होंगे। तो इस दुनिया से चले जाएंगे या मोक्ष को प्राप्त कर लेंगे या हमारी आत्मा का एक्जिस्टेंस खत्म हो जाएगा। तो इसका मतलब यह भी, हम इस दुनिया के अंदर, इन पांच तत्त्वों के अंदर जो कुछ भी कैरी कर रहे हैं। वो हम क्या कर रहे हैं। वो हम अपने कर्मों को कैरी कर रहे हैं। यदि मैं यह कहूँ तो गलत नहीं होगा। फिर स्पिरिचुअल साइंस हमें यह भी कहती है कि किसी के साथ हमने दिया या लिया। मतलब हम अपने जन्म- जन्मांतर में जो कुछ भी लेते हुए आए। हमने या तो कुछ दिया है, किसी को। तो हमने उससे वापिस लेना है। तो व्यक्ति, वो सेचुएशन, वो लोग हमें मिल जाएंगे या फिर हमें किसी को कुछ देना है। यही हमारे जीवन का अल्टीमेट परपज है। तो वो लेने वाला भी हमारे सामने आ जाएगा। तो हमें यह बहुत गहराई से यह समझना चाहिए कि यह सब कैसे होता होगा। स्पिरिचुअल साइंस हमें यह भी कहती है कि हम जो अपने आप को फीड कर रहे हैं। जैसे फॉर एग्जांपल हम जब कहीं न्यूज़ पढ़ते हैं। इतना बुरा मतलब जैसे हम सोचेंगे, बोलेंगे। वो हम वैसे बन जाएंगे। तीन बंदर दिखाते हैं ना कि देखने, बोलने और सुनने से हम वैसे ही बनते चले जाते हैं। तो हम कैसे बनते चले जाते हैं। जो कुछ भी इंफॉर्मेशन देखने, सुनने और बोलने से अपने अंदर इकट्ठी करते हैं। कहीं न कहीं हमारे संस्कार बन जाते हैं। तो हमें स्पिरिचुअल साइंस यह कहती है कि आत्मा की तीन फैकेल्टीस हैं। मन, बुद्धि और संस्कार। बहुत गहराई से समझने वाली बात है कि मन से बुद्धि का और बुद्धि से संस्कार का। क्या रिलेशन है। क्योंकि जो हमारे मन में आता जा रहा है। वो ही डेस्टिनी बनता जा रहा है। कई दिन मैंने बहुत गहराई तक समझने की कोशिश की। तो मुझे ऐसा लगा कि मन हमारे कलेक्शन ऑफ वाइब्रेशन। ऐसे कैसे होता है। जो हम सोच रहे हैं। हम सोचते हैं। हम बोलते हैं। वो हम बन रहे हैं। तो हम बेसिकली जो कुछ भी रेडिएट करते हैं। हम जब कुछ सोचते हैं। हम कुछ रेडिएट करते हैं। हम बोलते हैं। कुछ रेडिएट करते हैं। सुनते हैं। तो हम शरीर में डालते हैं। तो हम क्या डालते हैं। हम बेसिकली अपने शरीर में, हम जब ले रहे हैं। तो हम वाइब्रेशन को ही ले रहे हैं। हमारे अंदर बाहर आकाश तत्त्व है। इसी तरह से हमारे शरीर के अंदर भी आकाश और वायु तत्त्व है। जो इनर्जी फिल्ड हमने किसी भी कर्म से कमाई। कुछ अच्छा सोच कर। कुछ अच्छा मुंह से बोल कर या कुछ अच्छा आंखों से किसी को देखकर। यह हमने इस इनर्जी फील्ड में किया। मान लीजिए हमने किसी को बुरी दृष्टि से देखा। तो वो आत्मा, हमने किस को देखा। आत्मा को देखा। यदि शरीर को देखा। तो हमने उसके ऑरा को देखा। क्योंकि हर आदमी अपने ऑरे से सराउंडेड है। हमने उस ऑरे को देखा। इनर्जी ने इनर्जी को देखा और उस इनर्जी ने वैसी ही इनर्जी ली। मैंने किसी के लिए करुणा क्रिएट करी। तो उसकी करुणा ही मेरे पास आएगी। यदि मैंने किसी के लिए हेटिड क्रिएट किया। तो वो हेटिड ही मेरे पास आएगा और वो कहां आएगा। मेरे अंदर आएगा और वो कहां जाएगा। मेरे मन में जाएगा। मन क्या हुआ। फिर मन हुआ बेसिकली, ऑल कलेक्शन ऑफ द वाइब्रेशन। अब क्या है। मन से क्या रिलेटेड है, बुद्धि। तो ऐसा मेरे को लग रहा था। शायद हम जो, मन को यह हॉर्ट मान लेते हैं ना। ऐसा नहीं होगा। हर सैल का एक मन है। हर सैल की एक बुद्धि है और हर सैल का एक संस्कार है। क्यों, क्योंकि हमारी पूरी ह्यूमन बॉडी में सैल इज द बेसिक इंस्ट्रक्शनल एंड फंक्शन यूनिट ऑफ अवर लाइफ। सैल से ही टिशू, टिशू से ही ऑर्गन। ऑर्गन से ऑर्गन सिस्टम और ऑर्गन सिस्टम के कॉम्बिनेशन से ही ह्यूमन बनता है। इसलिए हम जो वाइब्रेशन ले रहे हैं। अपने किसी भी कर्म के कारण। वो वाइब्रेशन हमारे मन में जाएंगे और वो मन जैसे बाहर यह इनर्जी फील्ड्स क्या करते हैं, सबअटॉमिक पार्टिकल। सबअटॉमिक पार्टिकल फिर कोई एक एलिमेंट बनाता है। इसी तरह से हमारे शरीर के अंदर यह जो वाइब्रेशन हम ले रहे हैं। वाइब्रेशनस क्या कर रहे हैं। हमारे शरीर के अंदर तत्त्वों का निर्माण कर

रहे हैं। यदि हम अपनी पूरी ह्यूमन बॉडी को देखें। तो हमारे अंदर कार्बन, हाइड्रोजन ऑक्सीजन, नाइट्रोजन, फास्फोरस, सल्फर और कुछ आयोस हैं। इन सबसे ही हमारी पूरी बॉडी बनी है। तो यह तत्व जो हमारी पूरी बॉडी को बना रहे हैं। बेसिकली चाहे वो डीएनए हो। चाहे वो आरएनए हो। चाहे वो प्रोटीन हो। चाहे वो लिपिड हो। चाहे वो कोई कार्बोहाइड्रेट हो। वो सैल मेंब्रेन हो।

वो माइटोकॉण्ड्रिया हो। सब के सब इन्हीं तत्वों से मिलकर बने हैं। तो यह तत्व बने कहां से। यह सैल बनाया किसने। यह सैल बनाया। एक तो हमारी आत्मा की इन्हेरेंट इनर्जी ने। जो हमने जन्म-जन्मांतर में कमाई। वो क्या है। हमारी एक फाउंडेशन और दूसरा हमने उस फाउंडेशन को यूज करके। हमें आगे वैसे ही लोग मिले। तो हमें लोग मिले का मतलब क्या है। हमें जो परिवार में लोग मिले। वो हमें कहीं ना कहीं हमारे कर्मों का हिसाब किताब है। तो क्या कर रहे हैं। हम, वो ही इनर्जी को एक्सचेंज कर रहे हैं या हम जो कुछ भी संस्कार आगे ओर क्रिएट कर रहे हैं। वो बेसिकली हम सेम इनर्जी। क्योंकि जब हम घर में किसी से मिलते हैं। तो हम उनके साथ ज्यादा क्यों अटैच होते हैं। बाहर वालों के साथ क्यों अटैच नहीं होते। क्योंकि हम भी कहीं न कहीं, जन्मांतर में बहुत लंबे समय तक रहे हैं। तो हमारी इनर्जी फील्ड के साथ बहुत ज्यादा क्लोज रिलेटिड हैं। एक मां अपने बच्चे के साथ क्यों। क्योंकि वो उस बच्चे को जन्म देती है। तो उसकी इनर्जी फील्ड अपने बच्चे की इनर्जी फील्ड के साथ ज्यादा क्लोज रिलेशनशिप है। इसलिए वो अपने बच्चे को कुछ भी होने पर बहुत परेशान हो जाती है। तो रिजन है ना। इनर्जी का मतलब रिजोनेशन। हम देख रहे हैं। रेजोनेटिंग पावर विल बी मोर। तो यहां भी वही सब कुछ है। कहने का मतलब कि हमने जो वाइब्रेशन अपने अंदर लिए। इन्होंने हमारे अंदर क्या किया। कुछ तत्वों का निर्माण किया।

तो एक सैल बन गए। तो एक सैल क्या हो गए। अभी फाउंडेशन हो गई। जो एक नए जीव की पूरी रचना करेगी। अब यह एक सैल क्या बना। हमें यह देखना चाहिए। जब हम कोई भी कर्म करते हैं। तो हम क्या करते हैं। कर्म मतलब क्या। आप ने सोचा। हम अच्छा भी सोच सकते हैं। बुरा भी सोच सकते हैं। दो ही ऑप्शंस हैं। जो कुछ भी सोचोगे। वो क्या होगा। वो इस आकाश और वायु तत्व में जाएगा। वो रेडिएट होकर फिर हमारे पास ही आएगा। हम आंखों से किसी की अच्छाई देखेंगे या बुराई देखेंगे। वो उसकी इनर्जी फील्ड में जाएगी। वापिस हमारे पास ही आएगी। हम किसी को मुख से अच्छा बोलेंगे। हमारे पास ही वापिस आएगा। हम कान से अच्छा सुनेंगे या मुंह से बोलेंगे। तो हमारे पास ही वापिस आएगा। हम हाथ से किसी अच्छे कर्म को करेंगे। वो हमारे पास ही वापिस आएगा और जो हम करते आए हैं। जन्म- जन्मांतरों से, आत्मा की इन्हेरेंट इनर्जी में हर पल, जो हम कर्म कर रहे हैं। उससे हम क्या बन गए। एक डिफरेंट और यूनीक इंडिविजुअल। तो जो कुछ भी हमने किया। वो हमारा रिजल्ट क्या है। वो उस पूरी बॉडी के एलिमेंटल स्टेटस का एक रिजल्ट है। वो है, हमारा ऑरा। तो हमारे ऑरे का जो कलर है। वो हम क्या हैं, अंदर से। उसको रिफ्लेक्ट करता है। तो जो बाहर हमारा ऑरा है। वो बेसिकली इंटरनल रिफ्लेक्शन ऑफ ऑल द एलिमेंट्स विच आर प्रेजेंट इन विद अस। ऐसा नहीं होता। तो हर किसी इंसान का ऑरा सेम होना चाहिए था। लेकिन ऐसा नहीं होता। जो इंसान बहुत शांत है। बहुत डिवाइन है। उसका वाइट वाला है। गुस्सा करने वाले का रेड ऑरा है। जो बुरे काम कर रहा है। उसका ब्लैक ऑरा है। तो इसी तरह डिफरेंट-डिफरेंट कलर्स है। कलर्स किसने बनाए। कलर्स तो एलिमेंट के कारण। तो यह जो वाइट ऑरा बन गया या कोई भी ऑरा बन गया। वो इसका रिफ्लेक्शन है और वो जो इंडिविजुअल बन गया। वो बनने के बाद भी ऑटोमेटिकली कर्म कर ही रहा है। क्यों, क्योंकि मेरा जो ऑरा है। किसी भी इंडिविजुअल का जो ऑरा है। वो बेसिकली कहां जा रहा है। वो इस इनर्जी फील्ड के साथ ही तो कनेक्टेड है। वो कहीं अलग नहीं है। दैट इज इंडिविजुअली नोट सर्टेन अन्टाइडी। तो ऑल द टाइम। जो हमारे यह पूरे का पूरा वायुमंडल है। यह जो पूरा आकाश तत्व है। इसके अंदर भी लोअर और हाई इनर्जी वाइब्रेटिंग फील्ड्स है। हमारा ऑरा अपने आप ही जो हम अंदर से बन गए। वो हम ऑटोमेटिकली इस इनर्जी फील्ड से दे भी रहे हैं और ले भी रहे हैं। बिकॉज वी आर कांस्टेंट टच विद दैम। तो यह भी एक कर्म है। तो हमने एक इंडिविजुअल कर्म किए। एक हमारी पूरी बॉडी के ऑरे ने कर्म किया। तो यह क्या है। हमारे कर्मों का एक्सचेंज है। कर्मों के एक्सचेंज से हम क्या कर रहे हैं। कोई भी कर्म करके हमने क्या किया। बेसिकली कुछ इनर्जी को दिया और कुछ इनर्जी को लिया। कोई भी कर्म, इनर्जी को दिया - इनर्जी को लिया। हमने अगर अच्छी इनर्जी दी। तो हमारे अंदर कौन सी इनर्जी जाएगी। अच्छी ही जाएगी। वो हमें अच्छा बना देगी। हमने यदि बुरा किया। बुरे को ही हमने एक्ज्यूलेट किया। तो वो बुरे वाइब्रेशंस का मतलब है कि हमने लोअर वाइब्रेशन को अपने अंदर इकट्ठा किया और हमने अपने सैल के

अंदर डाल दिया। हमने उसे जो इन्हेल किया। तो बेसिकली उन्हें हमने कंज्यूम कर लिया और वो वाइब्रेशन भी जा करके हमारे शरीर में कुछ एलिमेंट बनाएंगे। अभी मैंने पिछली वाली वीडियो में बताया कि हाई वाइब्रेशन फ्रीक्वेंसी क्या कर रही है। लाइट एलिमेंट को बना रही है और लोअर वाइब्रेशन फ्रीक्वेंसी क्या कर रही है। हैवी एलिमेंट को बना रही है। आज दुनिया की हालत हम कहते हैं कि वायु तत्त्व के कारण हो गई है। क्योंकि वायु तत्त्व हैवी हो गया है। जो हमें दादा जी ने बताया।

अब हम इसको देखते हैं कि यह हमारे में जाकर के क्या करे। तो हमने यहां पर, यह दोनों चीजें आपस में रिलेटेड हैं। कर्म के कारण भी और वायुमंडल के हैवी होने के कारण भी। आज दुनिया की हालत ऐसी क्यों हो गई। देखिए यहां पर हमने इनर्जी फील्ड को लिया। पिछले वीडियो में हमने देखा। यह जो वाइब्रेशंस हैं। यह क्या कर रहे हैं। सबअटॉमिक पार्टिकल बना रहे हैं। तो हम यह भी कह सकते हैं। हमारे शरीर के अंदर जो वायु और आकाश तत्त्व। जो हमने अपने कर्मों से अर्जित किया और जो हमारी सोल ने, जो आज की हमारी इनर्जी है। वो हमारे जन्म-जन्मांतरों का कर्म फल है। उसके अंदर सब चीजों की रिकॉर्डिंग है। वो ही हमें मोटिवेट कर रही है। हम किसी के अंदर अच्छाई देखें। किसी के अंदर बुराई देखें। हम किसी को दें या हम किसी से लें। वो हमारे पाथ को डिसाइड कर रही है। तो हमारा मन हमें अंदर से क्या करता है। उसी की ओर आकर्षित करता रहता है। तो यह आकर्षण मन। क्योंकि आत्मा का मूल संस्कार है, मन। तो वो हमें किस रास्ते पर ले जाएगा। हमारी आत्मा की, अंदर की पावर डिसाइड कर रही है। फिर हम उस आत्मा की फैकल्टी को मतलब अपने मन को यूज करके जो कर्म कर रहे हैं। उससे हमें क्या अरन कर रहे हैं। हर मोमेंट पर उन वाइब्रेशन्स को अरन कर रहे हैं और उसे हम अपने सैल में कंज्यूम कर रहे हैं। दूसरी चीज मन को बुद्धि। अब यह बुद्धि को कौन एग्जीक्यूट करता है। देखिए अब वहां तो कोई जवाब नहीं है, स्पिरिचुअल साइंस में। लेकिन अब मैं मॉडर्न साइंस पर आती हूं। मॉडर्न साइंस हमें कहती है कि सैल हमारी बेसिक स्ट्रक्चरल यूनिट है और इसका मास्टर मॉलिक्यूल है, डीएनए। हम जो हैं, जैसे हैं। वो अपने डीएनए के कारण हैं। डीएनए को हम देखें। तो डीएनए को हम जेनेटिक मैटेरियल भी कहते हैं। हमारी जितनी भी रिकॉर्डिंग है। मतलब इन्हेरेंटस मॉलिक्यूल। इन्हेरेंटस मतलब हमने पेरेंट्स से, मदर से - फादर से। जो कुछ भी लिया। वो हमारे उस डीएनए के अंदर रिकॉर्डिंग है। तो वो हमारा कंप्लीट ग्नोमे है। डीएनए की फुल फॉर्म होती है, Deoxyribonucleic एसिड और 1957 में वैटसन ने इसका स्ट्रक्चर बताया था। उन्होंने बताया था कि हेलीकल स्ट्रक्चर होता है और मैं यह भी बता दू कि डीएनए सैल के अंदर फ्री नहीं होता। डीएनए न्यूक्लस के अंदर होता है और डीएनए न्यूक्लस के अंदर एक लैड लाइक स्ट्रक्चर मतलब हेलिक्स की तरह होता है। मतलब यह फ्री नहीं होता। इट इज ऑलवेज रीमें एसोसिएटेड विद हेस्टों प्रोटींस। तो हेस्टों प्रोटींस और डीएनए आपस में मिलकर एक न्यूक्लर प्रोटीन कॉम्प्लेक्स बनाते हैं। जो हमारे सैल के अंदर क्रोमोसोम की फॉर्म में होता है। तो हम सबके अंदर मतलब ह्यूमन में जो डीएनए का साइज है। वो है, 3 बिलियन बेस पेयर और हमारे अंदर 23 क्रोमोसोम होते हैं। जिसमें से 22 ऑटोसोम एंड 1 इज सेक्स क्रोमोसोम। जो फीमेल में X-X होता है। मेल में X-Y होता है।

तो यह पूरा हमारा जेनेटिक मेकअप है। तो यह चारों तरफ से डीएनए हमारी पूरी सैल की अडेंटिटी को, हमारी पूरी लाइफ में कंट्रोल करता है। यही हमारी बुद्धि है और यह बुद्धि क्या कर रही है। सैल में क्या-क्या होगा। कितना होगा। कैसे होगा। यह सब डीएनए डिसाइड करता है। तो डीएनए हमेशा एसोसिएटेड रहता है, हिस्टोन प्रोटीन से। तो वो डीएनए को प्रोटेक्ट करता है। क्योंकि डीएनए का मॉलिक्यूल यदि एक बार डिलीट हो गया। तो मतलब हमने अपने सैल की फंक्शनिंग को खुद ही डिस्टोर्ट कर दिया और तीसरी चीज होती है कि ग्नोमे साइंस यह कहती है कि हमारे अंदर मतलब ह्यूमन में जो इस डीएनए की लेंथ है। वो है, 3 बिलियन बेस पेयर। मतलब 3×10 रेज टू पावर 9 बेस पेयर और डीएनए उन्होंने यह भी बताया। यह जो 100% ग्नोमे फ्रेक्शन है। इसका सिर्फ 3% ग्नोमे ही ऐसा होता है। जो प्रोटीन को फॉर्म करता है। मतलब जैसे एक सैल में डीएनए होता है। उसके बाद एक प्रोसेस होता है। जिसे हम बोलते हैं। सेंट्रल डोगमा। तो डीएनए देता है, आरएनए और आरएनए देता है, प्रोटीन। तो हमारे सैल के अंदर प्रोटीन एक मेजर फंक्शन मॉलिक्यूल होता है। आरएनए होता है, रिबोन्यूक्लिक एसिड। तो हर फंक्शन मॉलिक्यूल पोर्टेंशियल कहां से बना। डीएनए से बना। तो उन्होंने कहा। यह जो प्रोटीन बन रहा है। यह सिर्फ इस 100% ग्नोमे का खाली 3% ही प्रोटीन बनाता है। ग्नोमे साइंस कहती है कि 97% डीएनए, जंक डीएनए है। जंक डीएनए मतलब उन्हें इसका फंक्शन नहीं पता। तो आज मुझे स्पिरिचुअल साइंस के पाथ पर मतलब पाथ पर चलते हुए। मुझे आज इसका का अन्सर मिला गया है। ऐसा मुझे लगता है कि हमारे अंदर हम में जन्म-जन्म की रिकॉर्डिंग है। मतलब यह स्पिरिचुअल साइंस कह रहा है कि हमारे कर्मों का सारा हिसाब-किताब। हम जो जीवन में करेंगे। यह सारा का सारा

हमारे सोल डीएनए के अंदर इम्प्रिंटेड है। कैसे इम्प्रिंटेड है। डीएनए के स्ट्रक्चर को बहुत डिटेल से पढ़ा है। तो मैंने इसी स्ट्रक्चर को एलिमेंटल लेवल पर समझने की कोशिश की कि हम यदि देखें डीऑक्सी रिबोन्यूक्लिक एसिड तो इसमें क्या है। इसमें है, डीऑक्सी रिबो शुगर। इसमें क्या है, फॉस्फोरेट। उसमें क्या है, नाइट्रोजेनस बेसिज। अब हम इस एक मोनोमर्स न्यूक्लियोटाइड को एक एलिमेंटल लेवल पर देखें। डीऑक्सी रिबो शुगर के अंदर अगेन तत्त्व। कौन सा कार्बन, हाइड्रोजन और ऑक्सीजन। फॉस्फोरेट पर क्या है। फॉस्फोरस और ऑक्सीजन और नाइट्रोजेनस बेस में क्या है। Adenine, guanine, thymine, and cytosine जिसमें से Adenine, guanine डबल रिंग स्ट्रक्चर है। मतलब उनके अंदर 9 कार्बन एटम्स होते हैं। जिनमें thymine, and cytosine के अंदर 6 कार्बन एटम्स होते हैं और यह भी एक रूल है। क्योंकि ONA डबल स्टैंडर्ड होता है। मतलब उनकी पोलैरिटी होती है। 5 प्राइम, 3 प्राइम - 3 प्राइम, 5 प्राइम। तो यह रूल है कि हमेशा जो guanine बेस है। वो and cytosine के साथ ही बाइंड करेगा और जो Adenine बेस है। वो thymine के साथ ही बाइंड करेगा। मतलब हम इसको बोलते हैं। कंपलीमेंट्री बेस पेअरिंग।

यह पूरा का पूरा इसी तरह से AGCT, AGCT Adenine, guanine, thymine, and cytosine बहुत लोन्ग स्ट्रिंग से मिलकर। यह पूरा 3 बिलियन हमारा डीएनए स्ट्रक्चर बन गया। अब यह पूरा का पूरा डीएनए स्ट्रक्चर हम जो हैं। जैसे हैं। हम जन्मों-जन्मों में क्या करके आए। हम आगे क्या करेंगे। इसकी पूरी रिकॉर्डिंग मॉडर्न साइंस भी सोचती है कि यह एक कोड है। लेकिन कोई नहीं जानता कि दो इंडिविजुअल का डीएनए आपस में सिमिलर क्यों नहीं होता। तो आज मुझे स्पिचुअल साइंस से ऐसा लगता है कि दो इंडिविजुअल एक जैसे कर्म करते ही नहीं। तो जब एक जैसे कर्म करते ही नहीं। तो एक जैसी इनर्जी को रिसीव करते नहीं। यह इनर्जी जैसे मैंने अभी कहा कि हमने देखने, सोचने, बोलने से जो भी कर्म किए या हमारे ऑरा ने जो भी कर्म किए। वो हमने क्या किया। कर्म में हमने कुछ इनर्जी को एक्सचेंज किया। विड डिफरेंट एन्टाइटिस और हमने उसी इनर्जी को रिसीव किया। जैसे मैंने किसी में अच्छाई देखी। तो मैंने अच्छाई किसमें देखी। मैंने अच्छाई आत्मा में देखी। मैंने अच्छाई किसी ऑरा के अंदर देखी या मैंने अच्छाई किसी नेचुरल थिंग्स में देखी या मैंने अच्छाई किसी बुक में देखी। तो हर चीज की अपनी एक इनर्जी है। तो मैंने जब कुछ अच्छा देखा। तो उसकी अच्छी इनर्जी को अरन किया और अपने अंदर डाला। वो मेरे अंदर की इन्हेरेंट इनर्जी। यदि आज आकाश और वायु तत्त्व बाहर की दुनिया में सबअटॉमिक पार्टिकल्स बनाकर के वायु तत्त्व का निर्माण कर रहे हैं। तो क्या मेरे अंदर जो आकाश और वायु तत्त्व है। मेरे शरीर के अंदर रेगिमेंट निर्माण नहीं करेगा, करेगा। तो हम यदि मतलब डीएनए को देखें। तो डीएनए में क्या डिफरेंट है। सब में, डीएनए में यह बेस डिफरेंट है। मतलब Adenine, guanine, thymine, and cytosine

डिफरेंट है। अब यदि Adenine, guanine, thymine, and cytosine को एलिमेंटल लेवल पर देखो। तो यह भी कुछ एलिमेंट्स का कॉम्बिनेशन्स मतलब इसमें कार्बन है। इसमें हाइड्रोजन है। इसमें ऑक्सीजन है और इसमें नाइट्रोजन है। बस यह डिफरेंट तरीके से अरेंज हैं और thymine, and cytosine में खाली 6 कार्बन हैं और guanine, Adenine में 9 कार्बन हैं। तो यहां पर क्या हुआ। नंबर ऑफ कार्बन एटम्स आर मोर। मतलब स्थूल तत्त्व मोर। हाइड्रोजन क्या है। जिसमें गैसियस एलिमेंट्स हैं। नाइट्रोजन क्या है। गैसियस एलिमेंट्स हैं और कार्बन क्या है। एक स्थूल एलिमेंट है। लेकिन यदि आप देखें। तो यह एलिमेंट बनाया किसने। यह एलिमेंट बनाया लाइट ने ही है। किस लाइट ने। हमारी आत्मा की लाइट ने। जो वाइब्रेशंस हमने उसे दिए। हर एलिमेंट उसी से बनेगा। क्योंकि वो ही उसकी एक बेसिक कोरिनेट है। तो हमने जो इनर्जी इन्हेरेंट ली। आत्मा के आने पर ही जीव का निर्माण शुरू हुआ ना। आत्मा के नहीं, उस एक

पार्टिकूलर, एक सैल डीएनए ने तो बनाया। वो फर्स्ट सैल का डीएनए किसने बनाया। वो फर्स्ट सैल का डीएनए मदर-फादर नहीं बना सकते। वो उस इनर्जी के साथ सिमिलर आत्मा को अपने अंदर इंबाइब कर सकते हैं। लेकिन एनर्जी को नहीं बना सकते। तो इसलिए उस आत्मा की रिकॉर्डिंग ने उस एलिमेंट की रचना की और उन एलिमेंट्स की रचना से उन्होंने क्या करा कि अब हमें पता है कि जब यह वाइब्रेशंस आएंगे। वाइब्रेशंस से क्या बना है, सबअटॉमिक पार्टिकल्स और यही अलग-अलग पार्टिकल्स बनाकर एलिमेंट बना रहे हैं।

यदि हम चारों बेस को देखें। तो उनके अंदर नंबर ऑफ कार्बन एटम्स, नंबर ऑफ हाइड्रोजन एटम्स, नंबर ऑफ नाइट्रोजन एटम्स एंड नंबर ऑफ ऑक्सीजन। दे आर फाउंड टू बी डिफरेंट इन ऑल द फोर बेसिज ऑफ डीएनए। तो स्थूल, ओबिअसली बाद में बनेगा। पहले वायु तत्त्व बनेगा। क्योंकि यह भी प्रोसेस है ना कि हर एलिमेंट कैसे बनता है। जैसे दादा जी बताते हैं ना। पहले स्थूल और वायु तत्त्व जैसे बाद में बना। तो ओबिअस सी बात है कि हैवी एलिमेंट बाद में बनेगा। लाइट एलिमेंट पहले बनेगा। क्योंकि उसके अंदर नंबर ऑफ प्रोटॉन जो हैं। वो कम हैं। तो जिस तरह से हमारी इन्हेरेंट इनर्जी कहने का मतलब है कि जो इनर्जी संचित करती चली गई। उस संचित इनर्जी ने हमारे शरीर में एलिमेंट्स को बनाना शुरू किया और उन एलिमेंट ने वो पार्टिकल बेस बनाया। दूसरी चीज जो हम कहते हैं। आज दुनिया की हालत ऐसी हो गई। वायु तत्त्व हैवी हो गया। वो वायु तत्त्व हमारे अंदर जाकर क्या कर रहा है और कर्मों का हिसाब-किताब कैसे हमारे डीएनए में रिकॉर्ड हो रहा है। यह मैं एक एग्जांपल लेकर बताती हूं। हम कैंसर का एक एग्जांपल ले लेते हैं। हम कहते हैं कि स्पिरिचुअल साइंस कहती है कि कई जन्मों के कर्मों का हिसाब-किताब कैंसर है और मॉडर्न साइंस कहती है कि डीएनए इज फाउंड टू बी ऑक्सी डेटिवली डैमेज्ड। उन्होंने कुछ बायोमार्कर अडेंटिफाई किए। जैसे उन्होंने कहा कि 8-OXO-Guanine, 8-OXO-Guanine का मतलब है। guanine बेस तो सबके अंदर है। लेकिन guanine की 8th पोজीशन पर ऑक्सीजन गुप जुड़ गया। तो क्या बन गया। 8-OXO-Guanine बन गया और 8-OXO-Guanine में, मैं आप को बता दूं। कैंसर पेशेंट में ही बायोमार्कर नहीं है। जितने भी कंपलेक्स डिजीज हैं। चाहे वो एक्सिमेर हो। चाहे वो पार्किंसन हो। कोई भी डिजीज हो। उन सब के अंदर 8-OXO-Guanine इज रेस्पोंडिंग मोस्ट परमानेंट बायो- मार्कर। खाली guanine ही नहीं। इसी तरह से Adenine, thymine सभी केमिकली मॉडिफाइड हो जाते हैं। अब यहां पर यह जो 8-OXO-Guanine बना। यदि मैं उसको स्पिरिचुअल साइंस से देखूं। तो किसने बनाया। जस्ट बाई द अटैचमेंट ऑफ ऑक्सीजन। यदि ऑक्सीजन बना नहीं होता। तो यहां पर 8 पोজीशन भी जुड़ा नहीं होता। यह ऑक्सीजन किसने बनाया। यह नॉर्मल इंडिविजुअल में तो नहीं बन रहा। यह ऑक्सीजन उन आत्मा ने अरन किया। किसने अरन किया। यह उस आत्मा ने अपने कर्मों से अरन किया। हम कहते हैं, छ मॉडर्न साइंस में। यदि किसी आदमी ने बहुत बददुआएं लीं। तो दैट पर्सन विल सफर फ्रॉम हार्ट डिजीज। हम यदि अपने चक्र को देखें। तो हमारे 7 चक्र हैं और हर चक्र अपने पार्टिकूलर चक्र से कनेक्टेड है। तो जो इनर्जी हम ले रहे हैं। वो हमारे किसी ना किसी पार्टिकूलर चक्र में जा रही है और क्योंकि वो हमारा हर चक्र किसी ना किसी पार्टिकूलर ऑक्सीजन सिस्टम के साथ लींकड है। वो उसी पार्टिकूलर ऑक्सीजन की इनर्जी को कम या ज्यादा करेगा। यदि मैं इनलाइटन की ओर जा रही हूं। तो ओबिअस सी बात है। मेरे इनर्जी चक्र ऊपर की ओर एक्टिवेट होंगे और वो ब्रेन में ही जाएंगे और वो न्यूरोन्स को एक्टिवेट करेंगे। पर यदि मैं बददुआएं कमा रही हूं। तो वो मेरी इनर्जी चक्र, उसी इनर्जी चक्र में जाएंगे। उससे हार्ट कनेक्टेड है। क्योंकि जो चीज जहां से कनेक्टेड है। वहां ही जाएगी। मैं बुराई देख रही हूं। तो मेरे दिल को ही टच करेंगे। तो वो मेरे उसी इनर्जी चक्र से जाकर, मेरे हार्ट पर जाएगी और क्या करेगी। मेरे हार्ट की इनर्जी को डेफिसिट कर देगी। तभी तो हार्ट अटैक हुआ। हार्ट अटैक का क्या मतलब है। द हार्ट इज नॉट गेटिंग इनर्जी इन द फॉर्म ऑफ ओटीपी। तो इनर्जी कहां चली गई। इनर्जी यूटिलाइज हो गई। इनर्जी क्यों यूटिलाइज हो गई। क्योंकि डीएनए, अब वो फंक्शन मॉलिक्यूल नहीं बना रहा। जो उसको बनाने चाहिए। अब मॉलिक्यूल क्यों नहीं बना रहा। जस्ट बिकॉज ऑफ द केमिकल मॉडिफिकेशन। इसको हम बोलते हैं, केमिकल मॉडिफिकेशन। जैसे मैंने आप को एग्जांपल दिया, 8-OXO-Guanine इसी तरह से खाली डीएनए नहीं। इसी तरह से हमारे सैल में प्रोटीन भी केमिकली मॉडिफाइड होते हैं। वेंट हीअर जस्ट आई एम डिस्कसिंग द डीएनए। क्योंकि यह डीएनए ही मास्टर मॉलिक्यूल्स है। जो डीएनए में इनकोडिंग होगा। वो ही प्रोटीन को भी ऑल्टर करेगा। यही आपस में स्ट्रक्चर के फंक्शन के साथ रिलेशनशिप है।

क्योंकि डीएनए ही प्रोटीन मॉलिक्यूल्स बनाता है। अब क्या है। जैसे मान लीजिए एक ऑक्सीजन guanine के साथ जुड़ गया और उसने 8-OXO-Guanine बना दिया। अब यह देखा गया। एक टाइम के अंदर। जैसे हमारे सैल के अंदर ऑक्सी डेटिव डैमेज फ्री रेडिकल बनते हैं। यह नॉर्मल मकैनिज्म हैं। क्योंकि फ्री रेडिकल नहीं बनेंगे। तो नए मॉलिक्यूल्स नहीं बनेंगे। तो एक मॉलिक्यूल दूसरे मॉलिक्यूल के साथ इंटरैक्ट करने के लिए क्या करता है। हमेशा रिएक्टिव ऑक्सीजन स्पेसिज बनाता है। मतलब रिएक्टिव स्पेसिज भी बनाता है। तो नाइट्रोजन भी हो सकता है। लेकिन हमारी बॉडी के अंदर ऑटोमेटिक रिपेयर मकैनिज्म भी होता है कि एक मान लो। ऑक्सीजन न्यूट्रल फॉर्म में ना होकर। यदि उसने ऑक्सीजन रेडिकल बना दिया। तो बॉडी के पास वो मकैनिज्म है कि वो उस ऑक्सीजन फ्री रेडिकल को यूटिलाइज कर दे। क्यों, क्योंकि कोई भी फ्री रेडिकल को एक आम इंसान इस तरीके से समझ सकता है कि हमने एक तलवार लेकर भीड़ में किसी को खड़ा कर दिया। अब यह तलवार

जिसको भी छुएगी। क्या करेगी। कट करेगी। इसी तरह से कोई भी एलिमेंट, जब अपनी रिएक्टिव स्पेसीज में पहुंच गया। इसका मतलब वो अनस्टेबल हो गया। अनस्टेबल का मतलब उसको अपने आप को सेटिस्फाईड करने के लिए कुछ चाहिए। मतलब उसको दूसरा एलिमेंट चाहिए। चाहे वो दूसरा ऑक्सीजन मिले। तो वो O₂ का मॉलिक्यूल बनाएगा या उसे हाइड्रोजन मिले। तो वो H₂O बनाएगा। मतलब उसकी बैलेंसी सेटिस्फाईड नहीं हुई। तो वो क्या करेगा। वो रिएक्टिव बन गया। इसी तरह से जब उसने डीएनए पर अटैक किया। तो उसने बेस को मॉडिफाईड कर दिया और उसने 8-OXO-Guanine बना दिया। अब क्या होता है। क्योंकि डीएनए सैल, हर सैल की अपनी एक लाइफ होती है। किसी की 1 week, किसी की 15 days, किसी की 1 month तो सैल हमारे शरीर के अंदर बनते भी रहते हैं और टूटते भी रहते हैं। नए भी बनते हैं। स्टेम सैल्स क्या हैं। बेसिकली बोन मैरो में नए सैल बनाने की इंफॉर्मेशन होती है।

अब हम यह जो नए सैल बना रहे हैं। यदि 8-OXO-Guanine रिलीज नहीं हुआ। तो हर सैल जब दूसरे सैल बनाएंगे। तो एक प्रोसेस होती है। जिसको हम बोलते हैं। डीएनए का रेप्लीकेशन। मतलब जो 3 बिलियन बेस पेयर डीएनए है। यह पूरे का पूरा नए सैल के अंदर एगजैक्टली 3 बिलियन बनेगा। तभी दूसरे सैल बनेंगे। नहीं, तो यदि यह डीएनए शॉट हो गया। तो सैल नहीं, तो दूसरा ऑल्टर हो जाएगा। वो तो नहीं हो सकता। तो यह जब 3 बिलियन बनेगा। तो 8-OXO-Guanine यदि यह रिपेयर नहीं हुआ। बिफोर द रेप्लीकेशन। तो यह क्या करेगा। यह अब G की जगह ऑटोमेटिकली वहां T इंसर्ट कर देगा। जो साइंस वाले कहते हैं। 8-OXO-Guanine की जगह T आ गया। अब मैंने क्या बताया था कि नॉर्मल डीएनए G के साथ हमेशा C वाइंड करता है और A हमेशा T के साथ वाइंड करता है। लेकिन जब 8-OXO-Guanine बॉडी में क्लियर नहीं हुआ। तो उसने क्या कर दिया। अब वहां पर G की जगह T बना दिया। तो अब T किसके साथ वाइंड करेगा, A के साथ वाइंड करेगा। तो यहां पर क्या हुआ। डीएनए की सीक्वेंस चेंज हो गई। जिसे हम साइंटिफिक भाषा में कहते हैं, मोटेशन। मोटेशन कहां से आई। बेसिकली ऑक्सीजन से आई। ऑक्सीजन कहां से आई। हमारे सुक्ष्म शरीर के डिस्चार्ज होने से आई। जो हमें स्प्रिचुअल साइंस समझा रही है कि हमारा सुक्ष्म शरीर डिस्चार्ज हो गया। तो हमारा कारण शरीर इफेक्टिव हो गया। तो कारण शरीर क्या है। कारण शरीर, इट इज ए डीएनए मॉलिक्यूल्स और सुक्ष्म शरीर क्या है। जो हमारी इन्हीं वायु तत्त्व से और हमारे अकाश तत्त्व से मिलकर बना हुआ है। तो हमारा आकाश तत्त्व और वायु तत्त्व यदि हमारा डेफिसिट होगा। तो ओब्सली, वो हमारे सैल के बायोमॉलिक्यूल्स पर इफैक्ट डालेगा। तो वो इसी तरह उनको केमीकली मॉडिफाईड कर देगा। इसी तरह से दादा जी कह रहे हैं। आज आप का वायु तत्त्व हैवी हो गया। इसलिए इंसान की सोच वैसी ही बन गई। उसकी वैसी आदतें हो गईं। उसे बाहर खाना पसंद है। क्योंकि जैसे वह खुद है, अंदर से। वह उन्हीं चीजों को लाइक करता है। यू नॉ संगति, संगति का बहुत को-रिलेशन है, इनर्जी के साथ। हर चीज एक-दूसरे के साथ लिंकड है। तो लिंक क्या हुआ, हैवी एलिमेंट्स। जैसे किसी ने ऑक्सीजन लिया ही नहीं। अब यदि आज वायुमंडल के अंदर कार्बन ज्यादा है। उसने कार्बन मोनोऑक्साइड बनाया या कार्बन डाइऑक्साइड बनाया। तो प्योर ऑक्सीजन तो मिली नहीं। वो जब ले ही रहे ऑक्सीजन के मॉलिक्यूल्स को, किसी हैवी एलिमेंट्स के साथ ले रहे हैं। तो हम उसको वेरी इजीली वी कैन को-रिलेट, वेंट वी नीड, वेंट वी आर इनहेलिंग एंड वेंट वी आर गेटिंग। तो इसी तरह से क्या होगा। जो हमारा डीएनए है। वो ऑक्सीडेटिवली डैमेज होता चला जाएगा। तो कर्मों का हिसाब-किताब कैसे रिकॉर्डिंग है, देखिए।

कैंसर को कहा जाता है, स्प्रिचुअल साइंस में। कई जन्मों का हिसाब-किताब उसमें रिकॉर्डिड है। आप यदि देखेंगे। तो कैंसर पेशेंट के अंदर 8-OXO-Guanine इज वन टू बी प्रेडोमिनेंस बायोमार्कर। इन मोस्ट ऑफ द ऑर्गन ऑफ द बॉडी। इसलिए आज यदि साइंस यह सोचती है कि वो एक ऐसी ऑर्गन को डबेल्य कर सकती है और वो उसको फिट कर सकती है। तो यह साइंस कभी सक्सेसफुल नहीं हो सकती। क्योंकि उन्हें यह नहीं पता कि जब आप नया ऑर्गन लगा भी दोगे। लेकिन यह नया ऑर्गन इन ह्यूमन बॉडी की वाइब्रेशन फ्रीक्वेंसी पर ही फंक्शन करेगा। उनकी बॉडी के वायु तत्त्व में प्रोटॉन है या उस वायु तत्त्व को। उन वाइब्रेशंस फील्ड को अरन कर रहा है। वो उसको नहीं रोक रहा। तो इसलिए नया ऑर्गन बनाने से क्या होगा। आप नया ऑर्गन लगाओगे। नया ऑर्गन फिर चार दिन के बाद खराब हो जाएगा। कुछ महीनों बाद खराब हो जाएगा। कुछ सालों बाद खराब हो जाएगा। क्योंकि आप ने जड़ को नहीं पकड़ा। आप ने खाली पेड को ऊपर से पकड़ा। तो यहां पर हुआ क्या। अच्छा फिर क्या है। डिग्निटी कुछ पेशेंट को हम देते हैं। उनके कर्म। इस बात को हमें बहुत ध्यान से समझना चाहिए। मान लीजिए

किसी को कैंसर हो गया। उसने कोई ट्रीटमेंट लिया और वह जल्दी से ठीक हो गया। क्यों, क्योंकि हो सकता है। हर चीज, जैसे कोई भी डिजीज है। एक्यूरेट भी होता है, एक्रोनीमिक। एक्यूरेट मतलब थोड़े समय के लिए। जल्दी-जल्दी ठीक हो गया। एक्रोनीमिक मतलब बहुत लंबा चौड़ा हिसाब-किताब। तो यहां पर भी हमारा कौन सा मॉलिक्यूल इफेक्ट होगा। कितना इफेक्ट होगा। यह डिपेंड करता है कि हमारे शरीर में एलिमेंट्स कितने बन रहे हैं। जैसे आप यदि ट्यूमर को ही देखो। तो ट्यूमर, मलिंगेंट भी होता है। ट्यूमर बेनाइन भी होता है। बेनाइन का मतलब एक ही जगह पर रुका हुआ और एक जो पूरी बॉडी में स्प्लिट हो जाता है। तो पूरी बॉडी में स्प्लिट का क्या मतलब है। बहुत लंबा हिसाब किताब है। आप के शरीर की इनर्जी, इतनी लॉ वाइब्रेटिंग फ्रीक्वेंसी पर रेजोनेट कर रही है कि वो इतनी ज्यादा हैवी एलिमेंट्स बना रही है कि आप का कारण शरीर मतलब आप का डीएनए टोटली ऑक्सीडेटिवली डैमेज्ड हो रहा है और वो बॉडी की रिपेयरिंग कैपेसिटी से बेयोंड चला गया। यदि एक बार एक डीएनए की सीक्वेंस की जगह T चेंज हो गई। तो वो पूरे के पूरे बायोमोलीक्यूल्स की जो इंटरैक्शन है। मतलब यह डीएनए अल्टीमेटली क्या करेगा। तो इट हैज टू वाइंड विद सम प्रोटीन। तो इट विल इफेक्ट द डीएनए प्रोटीन इंटरैक्शन। इट विल इफेक्शन फॉर्मेशन आरएनए एंड इट विल इफेक्ट द फॉर्मेशन ऑफ द प्रोटीन। तो प्रोटीन हमारे सैल का। यदि हम डिटेल् में देखें। तो बहुत ही मेजर फंक्शन मॉलिक्यूल है। यह हमारे कर्म हैं और कर्म ही हमारे सुक्ष्म शरीर से रिलेटेड हैं। तो हमारे यह को-रिलेटेड हैं।

दूसरा हम कोई भी कर्म। एक दिन मैं ऐसे सोच रही थी कि मन, बुद्धि और संस्कार। इसका भी कोई रिलेशन होना चाहिए। तो हमने जो वाइब्रेशन क्लिएट किए। वह क्या हो गया, मन। बुद्धि, बुद्धि मतलब डीएनए ही हमारे सैल की फंक्शनिंग को डिसाइड करता है। जो हमारी साइंस कहती है। तो बुद्धि क्या है कि डीएनए की चारों तरफ क्या है। हिस्टोन प्रोटींस हैं और हिस्टोन प्रोटींस क्या करते हैं। वो डीएनए को हमेशा प्रोटेक्ट करके टाइटली मतलब वॉल लाइक ए स्ट्रक्चर की तरह। वो कंडेंस फॉर्म में रहता है, हमेशा और हिस्टोन प्रोटींस की फंक्शनिंग को जो रेगुलेट करते हैं। वो होते हैं, सम केमिकल्स ग्रुप। यहां पर दोबारा फिर से एलिमेंट्स आते हैं। देखिए वो होते हैं, कोबलर मॉडिफिकेशन। जैसे मिथाइलेशन मतलब प्रेजेस ऑफ CH₃ ग्रुप। डीएनए तो हम सबके अंदर कॉमन है। लेकिन फिर भी एक इंडिविजुअल के डिजीज होते हैं। एक को नहीं होते। जैसे फॉर एग्जांपल किसी को डायबिटीज हो गई। डायबिटीज क्यों हुई। क्योंकि इंसुलिन एंजाइम उस पार्टिकुलर इंडिविजुअल में कम हैं। लेकिन इंसुलिन जींस, जिस को डायबिटीज है, उसमें भी हैं। जिसको नहीं है, उसमें भी है, जींस। तो दोनों के अंदर हैं और दोनों के अंदर ही डीएनए का इंसुलिन जींस। वो एक्सप्रेस होकर प्रोटीन बनाएगा। लेकिन फिर वो इंडिविजुअल सफर क्यों किया। क्योंकि हिस्टोन के अंदर यह जो केमिकल मॉडिफिकेशन्स होते हैं। यह डिसाइड करते हैं कि किस जींस को कितना एक्सप्रेस करना है और जो रेगुलेटिंग पार्ट होता है। डीएनए पार्ट के जींस का मतलब सेरम रिजॉल्यूशन। वो भी डिसाइड करता है। तो हमारी खाली, यह जो डीएनए की सीक्वेंस को अरन कर रहे हैं। वो सबसे पहली बात तो यह है कि हमारे कर्मों का ही अउट कम है। मतलब डीएनए की सीक्वेंस आज की तारीख में कोई नहीं जानता कि दो ट्वेंस का डीएनए एक जैसा क्यों नहीं होता। वो इसलिए नहीं होता। क्योंकि दोनों की इन्हेरेंट इनर्जी एक जैसी नहीं होती और यह इनर्जी ही क्या कर रही है। हमारे अंदर सबअटॉमिक पार्टिकल्स से हमारे अंदर इसका निर्माण करती है और यह एलिमेंट्स ही आपस में डिफरेंट कॉम्बिनेशंस में जुड़ कर हमारे शरीर का एक जेनेटिक मेकअप बनाते हैं और इसलिए जेनेटिक मेकअप डिफरेंट है। इसलिए डीएनए की सीक्वेंस डिफरेंट है। इसका मतलब जितने भी रिस्पेक्टिव बायोमॉलिक्यूल्स के साथ वाइंड करेगी। वो डिफरेंट होगा और जो हमारी बुद्धि बनी। जो संस्कार, हमने मन में बना लिया। तो यह हमारी हिस्टोन प्रोटीन। क्योंकि इसे हम बोलते हैं, API जेनेटिक। API मीन्स अउट साइड मतलब डीएनए इज ऑलवेज सेंटर द इन्फ्रेंस ऑफ अउट साइड फैक्टर। यह अउट साइड फैक्टर क्या है। जैसे मिथाइल ग्रुप। अब मिथाइल ग्रुप क्या है। एक कार्बन, 3 हाइड्रोजन मिलकर एक मिथाइल ग्रुप बनाते हैं। एक कार्बन मतलब एक स्थूल एलिमेंट और 3 लाइट एलिमेंट्स। दूसरा केमिकल मॉडिफिकेशन क्या है। फोस्फोराइजेशन मतलब अटैचमेंट ऑफ फास्फोरस। फास्फोरस ग्रुप मतलब एक फास्फोरस 4 ऑक्सीजन। तीसरा क्या है, एक्विलेशन C₂S₃O₀ मतलब 2 कार्बन ग्रुप, 2 स्थूल एलिमेंट्स, 3 हाइड्रोजन लाइट एलिमेंट्स और 3 ऑक्सीजन एलिमेंट्स। अब हम देखें। तो देखो। कितना यह मतलब केमिकल्स ग्रुप। कैसे बनेंगे। यह किसने बनाए। हमारी इन्हेरेंट इनर्जी ने बनाए। कौन सी इनर्जी ने। जो हमने कर्म किए। तो हमने अपने मन से वाइब्रेशन को क्लिएट किया। हमने केमिकल्स मॉडिफाई करने के लिए कुछ केमिकल्स ग्रुप बनाए और फिर यह जब मिथाइलेशन है। यह डिसाइड करेगा कि यह डीएनए कितना एक्सप्रेस हो।

तो यह डीएनए बींग ए मास्टर मॉलिक्यूल्स विल डिसाइड कि वॉट विल बी द क्वांटिटी ऑफ द पार्टिकुलर प्रोटीन ऑफ द रेस्ट ऑफ फंक्शन विच आर रिलेटेड विद इट सेल्फ। यह क्या हो गया, एग्जीक्यूशन। इसे हम बोलते हैं, जींस की साइलेंसिंग। मतलब यह प्रेजेंस ऑफ केमिकल ग्रुप। जैसे मिथाइलेशन होता है, इसी तरह से डीमिथाइलेशन होता है। फास्फॉरलाइऐशन होता है, इसी तरह से डीफास्फॉरलाइऐशन होता है। हेजीटाइलेशन होता है, इसी तरह से डीहेजीटाइलेशन होता है। तो वो कितना होगा। कितने ग्रुप अटैचड होंगे। वो डिसाइड करेंगे कि यह पार्टिकूलर जींस कितने एक्सप्रेस होंगे और कितना क्वांटिटी ऑफ प्रोटींस बनाएंगे। तो क्या हम यह नहीं कह सकते। हमारे जो कर्मों का हिसाब-किताब है। वो हमारी पूरी की पूरी बॉडी की जो इन्हेरेंट इनर्जी है। वो ही डिसाइड कर रही है। तो मन, बुद्धि और संस्कार। तो जब वो हमारे सैल। एक सैल ने यह जो हमारे मॉलिक्यूल्स बन गए। यह उन्होंने क्या करा। हमारे संस्कार को बना दिया। संस्कार का मतलब क्या है कि हम एकमुलेट हो गए। हमने उस इनर्जी को एकमुलेट कर लिया। वो हमारे डीएनए का एक हिस्सा बन गए और तो वाकी रेस्ट ऑफ मॉलिक्यूल्स डीएनए ही बना रहा। वो हमारे संस्कार में आ गए। तो हम क्या कहते हैं। जब तक हम अपने आप को बदलेंगे नहीं। हमारे संस्कार परिवर्तन नहीं होंगे। संस्कार परिवर्तन के लिए क्या है कि हमें अच्छे रास्ते पर चलना पड़ेगा। जब हम अच्छे रास्ते के ऊपर चलेंगे। तो हम क्या करेंगे। हम हाई इनर्जी को लेंगे। वो हाई इनर्जी फिर से जाकर क्या करेगी। हमारे अंदर लाइट एलिमेंट्स को बनाएगी और हम अपनी हैवी इनर्जी को रिप्लेस करते जाएंगे। तो वेरी सिंपल को-रिलेशन।

एक चीज मैं एक ओर भी सोच रही थी कि यह कैसे होता होगा। हम कहते हैं कि कोई भी कर्म हमने किसी के साथ किया। वो हमारे पास वापिस आता है। जैसे अनंत भैया ने कहा कि हमने कुछ बुक्स को डाउनलोड करा और हमें यह भी नहीं पता। वो कौन व्यक्ति था। लेकिन वो हमें गूगल ड्राइव पर लिंक देकर चला गया। देखिए किसी ने भी हमें मिलना है। यह भी एक कार्मिक अकाउंट ही है। कौन हमें मिलेगा। यह मुझे ऐसा लगता है कि मतलब यह हमारा पार्टिकूलर ऑरा है। हम जो बन गए। हम कैसे, पूरे के पूरे क्रिएशन में, अपने आप मतलब हउ वी आर कम्युनिकेटिंग। हम कोई बोल कर तो कम्युनिकेट नहीं कर रहे। आपने तो नहीं कहा। आओ-आओ। मुझे बुक्स दे दो। लेकिन हउ यू आर कम्युनिकेटिंग। तो इनडायरेक्टली वी आर कम्युनिकेटिंग बाई मेल्ल्स ऑफ अवर ऑरा। क्या है, मुझे ऐसा लगता है कि दिस ऑरा हेज द डायरेक्ट रिलेशनशिप्स द एलिमेंट्स। वाइट ऑरा का मतलब है कि हमारे शरीर के अंदर उन एलिमेंट्स की फॉर्मेशन अभी ज्यादा हो रही है। जो डोनर स्टेट के अंदर है। तो डोनर स्टेट मतलब हम यदि आत्मा, आत्मस्वरूप में बन जाती है। तभी वो वाइट ऑरा कैरी करेगी। तो आत्मस्वरूप के अंदर क्या है। आप यदि प्रेम को देखो। तो आप कुछ नहीं लेते। किसी को आप देते हो। आप सहानुभूति को देखो। आप कुछ नहीं लेते हो। आप क्षमा को देखो। आप दूसरों को क्षमा करते हो। आप दूसरों पर परोपकार करते हो। आप दूसरों के लिए संवेदनशील होते हो। तो जब आपकी पूरी की पूरी इलेक्ट्रॉनिक बॉडी यह डोनर स्टेट में चली जाती है। तो आप का ऑरा वाइट बनता जाता है और जितना ऑरा आप का वाइट बनता चला जाता है। उतनी ही आप की ट्यूमन बॉडी की वाइब्रेशंस ऑफ फ्रीक्वेंसी रेज होती चली जाती है और आप के पास, आप को कहीं ढूँढने जाने की जरूरत नहीं है। वो आप के पास ऑटोमेटिकली आती है। क्यों, वो आप के पास आ गई। क्योंकि अब आप उसके मैग्नेट बन गए। वो चाहे इंफॉर्मेशन किसी व्यक्ति के द्वारा आए। किसी सिचुएशन के द्वारा आए। वो ऑटोमेटिक आए। वो ऑटोमेटिक रिफ्लेक्ट होगी। यह बहुत ही सिस्टमैटिक अरेंजमेंट मतलब भगवान का बनाया हुआ है। ऐसा मेरे को लगता है और दूसरी चीज हम कहते हैं। हमारे कर्मों का हिसाब-किताब। वो उसी समय भी आ सकता है। वो एक घंटे बाद भी आ सकता है। वो एक दिन के बाद भी आ सकता है। वो एक साल के बाद भी आ सकता है। वो एक जन्म के बाद भी आ सकता है। वो कई जन्मों के बाद भी आ सकता है। कैसे आता होगा। सोचने वाली बात है। तो मुझे ऐसा लगा। जैसे जो हम अपने ऑरा के अंदर यह इनर्जी फील्ड को लिए हैं। क्योंकि हमारे ऑरा के अंदर ही हमारी रिकॉर्डिंग है। हम किसी व्यक्ति के पास जाते हैं। तो हम कह रहे हैं। ऑरा इज जस्ट लाइक अवर परफ्यूम। मतलब क्या, सामने वाले के भी ऑरा है। मेरा भी ऑरा है। हम यदि देखें। तो दो ही स्टेट्स आती हैं, हमेशा। एक डोनर की - एक रिसीवर की। एक अच्छे की - एक बुरे की। तो इसका मतलब। हमारे ऑरे के अंदर दो ही चीजें हैं। एक अच्छा और एक बुरा। अब अच्छा ज्यादा है। तो दूसरे हमें रिस्पेक्ट ज्यादा देते हैं। हमारे से ज्यादा इंप्लूएस हो जाते हैं और बुरा ज्यादा है। तो हमसे दूर भागते हैं। तो यह पोजीशन है। तो यह कौन कम्युनिकेट कर रहा है। हम लोग कम्युनिकेट नहीं कर रहे। हमारी आत्मा, हमें क्या कर रही है। हमें उस कैरियर के पास लेकर जा रही है। जिससे हमें अपना हिसाब किताब पूरा करना है। हमारा ऑरा उसको, मतलब क्या कर

रहा है। पहचान रहा है। इट इज शॉर्ट्स ऑफ सिग्नलिंग। तो सिग्नलिंग हो रही है, देखिए और यह सिग्नलिंग हमें क्या कर रही है। हमें एक मैनेट बना रही है और ऐसे ही हमारी बॉडी का जो ऑरा है। वो क्या कर रहा है। शॉर्ट टर्म इंटरैक्शन- लॉग टर्म इंटरैक्शन। मतलब हमारा ऑरा के अंदर ही वो ऐसी कोडिंग, मुझे लगता है कि हो सकती होगी कि वो शॉर्ट टर्म इंटरैक्शन से, वो तुरंत का तुरंत हमारे पास आ गया। डिपेंड करता है। मैंने कौन सा कर्म किया कि जो तुरंत ही वापिस आ गया और मैंने कौन सा ऐसा कर्म किया। जो आज नहीं। वो वापिस आएगा, बाद में। क्योंकि कर्मों का हिसाब- किताब क्या है। मेरे अंदर कुछ अच्छा बैलेंस भी तो है। आत्मा एकदम ब्लैंक नहीं है ना। आत्मा के अंदर अच्छाई भी है। आत्मा के अंदर बुराई भी है। कोई भी आदमी 100% बुरा नहीं है। कोई भी आदमी 100% अच्छा नहीं है। अच्छे और बुरे का मतलब है कि उसका कुछ ना कुछ हिसाब- किताब बाकी है। जिस दिन यह कर्मों का हिसाब-किताब पूरा हो जाता है। वो आत्मा मोक्ष में चली जाती है। तो जब तक कर्मों के रिकॉर्डिंग है। वो तब तक अपने कर्मों को भोग रही है। वो पहचान कैसे रही है। ऑरे के जरिए। परम शांति।